नाद-नर्तन
जर्नल ऑफ डांस एण्ड म्यूजिक

UGC-CARE Listed ISSN: 2349-4654
वर्ष : 13, अंक : 1, जनवरी 2025

सामाजिक आंदोलनों में संगीत की भूमिका का विश्लेषण

हसनदीप सिंह
शोधार्थी, विजुअल एण्ड परफार्मिंग आर्ट्स विभाग,
गुरु नानक देव विश्वविद्यालय, अमृतसर

डॉ. राजेश शर्मा
विभागाध्यक्ष, विजुअल एण्ड परफार्मिंग आर्ट्स विभाग,
गुरु नानक देव विश्वविद्यालय, अमृतसर

सार-संक्षेप

भारत अपनी विशाल सभ्यता और संस्कृति के लिए पूरे विश्व भर में प्रसिद्ध है। इसकी सदियों पुरानी अपनी विशाल परंपराएं, धार्मिक मान्यताएँ और सामाजिक कार्य हैं। आज इसकी जड़े बहुत विशाल रूप धारण कर गई हैं। भारत एक कृषि प्रधान देश है। जिसमें अलग-अलग धर्म और परंपराओं को मानने वाले लोग रहते हैं और अलग-अलग काम करके अपनी जीविका कमाते हैं। समय-समय पर परिस्थितियों बदलने पर भारत में अलग-अलग धर्मों, जातियों, नस्लों के लोगों द्वारा अपने अस्तित्व को बचाए रखने के लिए और अन्याय के विरूद्ध खड़े होने के लिए इन सभी की ओर से समाज में समय-समय पर अलग-अलग आंदोलन आरंभ किए गए। कोई भी नेता, कोई भी संगठन समस्या से संबंधित सिद्धांतों का निर्माण कर उनका अनुसरण करते हुए मौजूदा सत्ता के विरुद्ध खड़े होकर अपने अस्तित्व का एहसास करवाता हैं। भारत में धार्मिक और सामाजिक सुधार के लिए कई महत्त्वपूर्ण आंदोलन समय-समय पर हुए। यह आंदोलन समाज में सुधार लाने के लिए चलाए जाते रहे हैं। भारत में आजादी के पूर्व और आजादी के बाद भी कई ऐसे आंदोलन देखने को मिलते हैं। जिसमें से कुछ आंदोलन के नाम इस प्रकार हैं जैसेः ब्रह्म समाज आंदोलन, आर्य समाज आंदोलन, सत्यशोधक समाज आंदोलन, जातिवाद (जाति, असमानता और शिक्षा के सुधार के लिए आंदोलन), दलित आंदोलन (दलितों के अधिकार की लड़ाई में महत्त्वपूर्ण), भारत छोड़ो आंदोलन, चिपको आंदोलन, कूका आंदोलन, किसानी आंदोलन आदि। उपरोक्त आंदोलनों की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि में जाने से पता चलता है कि इन आंदोलनों में जहाँ नेताओं के भाषण और वीरता पूर्वक कविताओं ने अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दिया वहीं इन आंदोलनों को सफल करने में संगीत का बहुत बड़ा योगदान दिखाई पड़ता है जैसे कि कुछ महत्त्वपूर्ण गीत जो कि इन आंदोलनों में निकलकर सामने आए जैसेः पगड़ी संभाल जट्टा, कर चले हम फिदा, मेरा रंग दे बसंती चोला आदि। जिससे पता चलता है कि इन सामाजिक आंदोलनों में जहाँ इनकी सफलता में संगीत का भी बड़ा महत्त्वपूर्ण योगदान है। प्रस्तुत शोध पत्र 2020 में हुए पंजाब के एक प्रसिद्ध किसानी आंदोलन में संगीत की भूमिका पर आधारित है। इस शोध पत्र के अंतर्गत आंदोलन के कारण एवम परिस्थितियों, आंदोलन में आए गीत और उन गीतों का आंदोलन में भाग लेने वाले व्यक्तियों की मानसिकता पर पड़ने वाले प्रभाव को प्रस्तुत किया गया है।

मुख्य शब्द : किसान, आंदोलन, कानून, सरकार, गीत, गायक।

शोध-पत्र

जीवन के हर एक पक्ष में संगीत अहम भूमिका निभाता है फिर वह कोई भी पक्ष हो जैसे संगीत का प्रयोग ईश्वर उपासना के लिए, मनोरंजन के लिए, प्रेम प्रसंग के लिए जहाँ इन सभी विधाओं के लिए संगीत का प्रयोग किया जाता है वही समाज का एक और पक्ष है जब समाज में सत्ता और जनता के बीच विचारों में मतभेद होता है और जब कोई क्रांति आती है कोई आंदोलन होता है तो इस पक्ष में भी संगीत एक विशेष भूमिका निभाता है। जब सत्ताधारी और आम जनता या दो विभिन्न स्तर के लोगों के बीच विचारों में उनके अधिकारों का हनन होता है तो लोग क्रांति के पक्ष को अपनाते हुए आंदोलन करते हैं। इसी प्रकार देश में बहुत से आंदोलन हमें देखने को मिलते हैं।

भारतीय किसान आंदोलन 2020 की शुरूआत भारतीय संसद द्वारा सतम्बर 2020 में पास किए गए तीन खेती कानूनो के विरुद्ध भारतीय किसानों का विरोध प्रदर्शन था। जिसे अलग-अलग किसान संगठनों द्वारा किसान विरोधी काले कानूनो के तौर पर दर्शाया प्रदर्शाया गया। जिनमें से भारत में 2020 में हुए किसान आंदोलन में किसानों ने नए कृषि कानूनो को रद्द करने, एसपी भढाने, ऋण माफी आदि जैसे विभिन्न मुद्दों को लेकर किसान आंदोलन किया। यह आंदोलन भारत में सबसे लंबे समय तक चलने वाले किसान आंदोलनों में से एक था। जोकि लगभग 2 साल तक चला। इन तीनों कानूनों का विरोध करते हुए अलग-अलग संगठनों ने स्थानिक प्रदर्शन शुरू किया जो कि ज्यादातर पंजाब में शुरू हुआ।

दो महीने के विरोध के प्रदर्शन के बाद पंजाब, हरियाणा, राजस्थान, उत्तर प्रदेश आदि राज्यों के लोग भी इस आंदोलन में शामिल हुए।

किसान आंदोलन की परिस्थितियों

उस समय के किसान आंदोलन की परिस्थितियों कुछ ऐसी थी पंजाब में दो महीने से अधिक समय के लिए रेलवे सेवाएँ रद्द कर दी गई, टोल प्लाजो पर किसानों ने कब्जा करके वाहनों की आवाजाई मुफ्त कर दी, दिल्ली जाने वाले सभी शाह मार्गों को बंद करके किसानों को दिल्ली प्रवेश से मनाही की गई और हरियाणा और दिल्ली बॉर्डर पर कांड्याली तारों, बैरिकेडों, आँसू गैस के गोलों के हमलों, पानी की बौछारों, सड़कों पर 20-25 फुट डूंघे खड्डे खोदकर किसानों को दिल्ली पहुँचने से रोका गया परंतु विरोध दिन-ब-दिन बढ़ता गया वहीं दूसरी ओर मीडिया की तरफ से इस आंदोलन को भंग करने के लिए किसान आंदोलनकारियों में घुसपैठ करने की हरकतें, खुफिया एजेंसियों की तरफ से निगाह रखने, शराब और आदि नशे, नाजायज हथियारों, तोड़-फोड़ और विस्फोटक कार्रवाइयों से सत्ता की ताकत से आंदोलन को नाकाम करने की कोशिश की गई। इस पूरे आंदोलन में जय किसान आंदोलन, ऑल इंडिया किसान सभा, कर्नाटक राज राएट्ठा संघा, लोक संघर्ष मोर्चा, किसान स्वराज संगठन, किसान मजदूर संघर्ष कमेटी, पंजाब किसान यूनियन, क्रांतिकारी किसान संगठनों आदि बहुत से किसान संगठन शामिल थे। अपने हकों के लिए इस आंदोलन में योगेंद्र सिंह उगराहां, बलवीर सिंह राजेवाल, दीप सिंह सिद्धू के अलावा कई विद्वानों में सुखप्रीत सिंह और पत्रकारों, प्रोफेसर, विद्यार्थियों, अध्यापको, गीतकारों कई किसान संगठनों आदि हर वर्ग ने अपना योगदान दिया। इसके अतिरिक्त खेती कानूनो के खिलाफ कई नामवर कवियों और विद्वानों ने पद्म श्री जैसे पुरस्कार भी वापस किए। इस आंदोलन में जहाँ अलग-अलग किसान संगठनों, पत्रकारों, विद्वानों की तरफ से अपना योगदान दिया गया वहीं अलग अलग गायकों और गीतकारों के भी इस आंदोलन में अपनी विशेष भूमिका निभाई गई।

आंदोलन में संगीत की भूमिका

संगीत कला सभी ललित कलाओं में से सबसे उत्तम मानी गई है और जीवन के हर वर्ग और जाति में संगीत का महत्त्वपूर्ण स्थान है। मनुष्य के जन्म से मृत्यु तक हर एक परिस्थिति में संगीत अपनी अहम भूमिका निभाता है। जिसमें अलग-अलग रीति-रिवाजों से संबंधित, पाठ पूजा, मंगल कार्यों से संबंधित त्योहारों आदि से संबंधित संगीत हमें समाज में देखने को मिलता है। इसी प्रकार अगर आंदोलन की बात की जाए तो आंदोलन में शामिल होने पर और पूरा दिन नाहरेबाजी करने से ही सिर्फ कुछ नहीं होता बल्कि ऐसे समय में संगीत का बड़ा अहम रोल रहता है और खासकर ऐसा संगीत जो संगीत वीर रस प्रधान हो जिसमें उस विषय से संबंधित साहित्य का वर्णन हो और उस समय की परिस्थितियों से संबंधित गीत हों, उस समय के नायकों खलनायकों से संबंधित गीत जिसमें हो उस प्रकार के संगीत की बड़ी अहम भूमिका ऐसे समय में रहती है।

किसान आंदोलन में आए गीतों की सूची–

क्र.सं.	गीत	गायक
1.	फतेह	रणजीत बावा
2.	फतेह मोर्चा	विरासत संधू
3.	जाता तगड़ा हो जा	जस बाजवा
4.	जवानी जिंदाबाद	कनवर गरेवाल, हर्फ चीमा
5.	सुन के जयकारा	राजवीर ज्वंदा
6.	होका	जस बाजवा
7.	पेचा	कनवर गरेवाल हर्फ चीमा
8.	किसान एंथम	मनकीरत, जस बाजवा, जॉर्डन संधू, अफसाना खान, दिलप्रीत ढिल्लों
9.	सवा लाख दिल्लीए	निरवैर पन्नू
10.	देख दिल्लीए	जस बाजवा
11.	पंजाब	सिद्धू मूसेवाला
12.	सुन दिलिए	राजवीर ज्वंदा
13.	जालम सरकारा	गिप्पी गरेवाल
14.	पंजाब बोलदा	रणजीत बावा
15.	असीं वडांगे	हिम्मत संधू
16.	पंजाब किथे दबदा	अर्जन ढिल्लों
17.	बॉर्डर	हर्फ चीमा
18.	जिंदाबाद	राजवीर ज्वंदा
19.	किसान दिल्ली	निंजा
20.	2 परसेंट वाले	अगम झींगर
21.	दिल्लीए	आर नेत्त
22.	किसानी मोर्चा	पम्मा डूमेवाल
23.	धरना	कुलवीर झिंजर
24.	तीर पंजाब तों	जैजी बी
25.	बागियां दे किस्से	तरसेम जस्सर
26.	अखा खोल	कनवर गरेवाल
27.	कलावां चर्दियां	सतिंदर सरताज
28.	फतेह इबारत	सतिंदर सरताज
29.	मिट्टी	हर्फ चीमा, कनवर गरेवाल
30.	पातशाह	हर्फ चीमा, कनवर गरेवाल
31.	किसानी मोर्चा 2	हैरी धालीवाल
32.	किसान बोलदा	हरजीत चीमा

33.	जिंदाबाद	राजवीर ज्वंदा
34.	सुन के जयकारा	राजवीर ज्वंदा
35.	जट्टा टकड़ा होजा	जस बाजवा
36.	जवानी जिंदाबाद	कनवर गरेवाल
37.	किसान अे दिल्ली	अजेय हुड्डा
38.	किसान अे दिल्ली	निंजा जस्सी लोहके
39.	जिंदाबाद जवानी जिंदाबाद किसानी	अजेय हुड्डा
40.	ऐलान	कनवर गरेवाल
41.	जीतूगा पंजाब	कनवर गरेवाल गलव ब्रैच
42.	अतवादी	अमृत पमाल
43.	बल्ले शेरा	हर्फ चीमा, कनवर गरेवाल
44.	डंडा अे खंडा	इंदर अटवाल
45.	आखरी फैसला	कनवर गरेवाल
46.	जीतुगा पंजाब	कनवर गरेवाल
47.	जित के पंजाब चलया	रेशम सिंह अनमोल
48.	फतेह एंथम	मनकीरत, जस बाजवा, जॉर्डन संधू, अफसाना खान, दिलप्रीत ढिल्लों

ऐतिहासिक पक्ष से देखें तो यह पहला किसान आंदोलन नहीं था बल्कि इससे पहले भी पगड़ी संभाल जट्टा, ऑल इंडिया किसान सेवा, चिपको आंदोलन जैसे कई आंदोलन देखने को मिलते हैं। जिसमें पगड़ी संभाल जट्टा की अगवाई शहीद ए आजम भगत सिंह और सरदार अजीत सिंह ने की। जिसमें पगड़ी संभाल जट्टा गीत उस समय का कौमी तराना बना और जिसका व्यापक असर यह हुआ कि आंदोलन कर रहे किसानों और फौजियों के कानों में वह तराना गुंजा और इस जज्बे और दबाव में ब्रिटिश सरकार ने तीन कानून 1960 में वापस लिए। किसान आंदोलन में बहुत से गीतों ने अपनी एहम निभाई जिनमें से कुछ गीतों का वर्णन इस प्रकार किया जा रहा है।

अस्तित्व से संबंधित गीत

अपने अस्तित्व को बचाए रखने और अपने अस्तित्व का एहसास करवाने के लिए अलग-अलग गीतों के द्वारा सरकार को पंजाब के लोगों के अस्तित्व के बारे में बताया गया है जिसमें से कुछ गानों का जिक्र इस प्रकार है–

1. पंजाब बोलदा[1]

यह गाना पंजाब के मशहूर गायक रणजीत बावा के द्वारा गाया गया है। इस गाने में सरकार को अपने अस्तित्व के बारे में बताते हुए कहा गया है कि जिन्हें तुम अतवादी बताते थे उन्होंने दिल्ली आकर आंदोलन के रूप में इकट्ठे होकर सरकार के विरुद्ध धरना लगा दिया और इस गाने में 80-80, 85-85 साल के बुजुर्गों के हौसले और पंजाब के गामें पहलवान, सोहन सिंह भकना जैसे नायकों का जिक्र करते हुए सरकार को अपने अस्तित्व का एहसास करवाया है। (रणजीत)

2. पंजाब[2]

यह गाना सिद्धू मूसेवाला की ओर से गाया गया है। इस गाने में पंजाब की बात करते हुए पंजाब के लोगों के बारे में बताया है कि पंजाब के लोग चुन चुन कर बदले लेते हैं और दिल्ली को चुनौती देते हुए इतिहास में से उदाहरण देते हुए सरकार को अपने अस्तित्व का एहसास करवाया है।(मूसेवाला)

3. देख दिल्लिए[3]

यह गाना जस बाजवा ने गाया है। इस गाने में बच्चे, बूढ़े और जवानों के आपस में मिलकर धरना लगाने और उड़ते पंजाब का जवाब देते हुए पंजाबियों के गर्म लहजे और जुल्म के विरुद्ध खड़े होने वाले और किसानी परचम और खालसाही झंडे दोनों एक साथ फहराते हुए सरकार को ललकारते हुए अपने अस्तित्व का एहसास करवाया है।(बाजवा)

4. एलान[4]

यह गाना कनवर गरेवाल द्वारा गाया गया है। इस गाने को बहुत ही जोश से गाया गया है जिसमें फसलों के फैसले किसान के द्वारा करने और इसके अलावा चढ़दी कला के गीत और जयकारों के साथ सिरों से बहते हुए खून में भी जैसे जयकारे लगे इन सब से सरकार को चिंतित होते हुए दिखाया गया है। (गरेवाल)

सकारात्मक सोच वाले गीत

आंदोलन में बहुत से गानों ने अपनी सकारात्मक भूमिका निभाई जिनमें से कुछ गानों का जिक्र इस प्रकार है–

आखरी फैसला[5]

यह गाना कनवर गरेवाल द्वारा गया गया है। इस गाने को वारी राय ने लिखा है और इस गाने का संगीत मन्ना सिंह ने दिया है। इस गाने में सरकार को पंजाबियों के स्वभाव के बारे में बताते हुए कहा है कि जिनका जन्म खंडे की धार में से हुआ है, जिन्हें गुरु ने गुरती दी है और गाने में लोगों को गुरुओं, पीरों की ओर से दी गई बखशिश से रू-ब-रू करवाते हुए लोगों के अंदर सकारात्मक सोच भरी गई है और इसके साथ सरकार के खिलाफ किसान मजदूर एकता की बात की है।(गरेवाल)

2. फतेह मोर्चा[6]

यह गाना विरासत संधू ने गाया है। इस गाने को सुख पुनिया और विरासत संधू ने लिखा है और सुख बराड़ ने इस गाने का संगीत दिया है। इस गाने में बताया गया है पंजाबियों ने जहाँ पर भी टक्कर ली हमेशा जीत हासिल

करके ही वापस लौटे हैं और अच्छे और बुरे वक्त में भी अपने सीने पर वार खाते रहे हैं और हमेशा सरबत का भला मांगने वाली यह कौम ना ही जुल्म करती है और ना ही जुलम सहन करती है। इतिहास में से हवाले देते हुए अपने अस्तित्व का अहसास करवाते हुए लोगों में सकारात्मक सोच का संचार किया है।(संधू)

3. फतेह इबारत[7]

यह गाना सतिंदर सरताज द्वारा लिखा और गाया गया है इस गाने का संगीत बीट मिनिस्टर ने दिया है। इस गाने में आंदोलनकारियों ने अपनी तकदीर का फैसला परमात्मा पर छोड़ते हुए अच्छे भविष्य की कामना की है और सरकार के खिलाफ खड़े होते हुए अपने अस्तित्व का भी एहसास करवाया है। इस गाने के माध्यम से आंदोलन के मौजूद लोगों के मन में सकारात्मक सोच का बीज बोया गया है।(सरताज)

सरकार के विरुद्ध गीत

1. जालम सरकारा[8]

यह गाना गिप्पी गरेवाल ने गाया है। इस गाने को इंदा रायकोटी ने लिखा है और इस गाने का संगीत जतिंदर शाह ने दिया है। इस गाने में किसानों के सरकार से दुखी होने की बात की है और कहा है कि किसान खेती छोड़कर हथियारों को हाथ में लेकर जालिम सरकार से टक्कर लेने की बात की है गाने में कहा है कि हम दशमेश पिता गुरु गोविंद सिंह के बेटे हैं और परमात्मा की रजा में रहते हैं और दुनिया का पेट भरते हैं इस प्रकार इस गाने में किसान और पंजाब के लोगों की बात की गई है। यह गाना सरकार के विरुद्ध वीर रस में गाया गया है जिसे सुनने वालों के अंदर एक जोश भर जाता है।(गरेवाल)

2. डंडा अे खंडा[9]

यह गाना इंदर अटवाल द्वारा गाया गया है। इस गाने को शेरा धालीवाल में लिखा है और इस गाने का संगीत कुंवर बराड़ ने दिया है। इस गाने में सीधे सरकार को ललकारते हुए उनके द्वारा किए गए अत्याचारों का जवाब खंडे (तलवार) से देने की बात की है और किसानों के बारे में गलत बियानबाजी करने वाले मीडिया को भी सीधा ललकारा गया है।(अटवाल)

बीर रस वाले गीत

आंदोलन में बहुत से गाने ऐसे भी देखने को मिलते हैं जिन्होंने आंदोलन में भाग लेने वाले आंदोलनकारियों में वीर रस का संचार करते हुए का उनका हौसला बढ़ाया और उनका नेतृत्व किया जिनमें से कुछ गानों का जिक्र इस प्रकार है–

1. जीतुगा पंजाब[10]

यह गाना कनवर गरेवाल द्वारा गाया गया है। इस गाने को हर्फ चीमा ने लिखा है और मन्ना सिंह ने इस गाने का संगीत किया है। इस गाने में सरकार को अपने अस्तित्व का अहसास करवाते हुए बताया है कि पंजाब के लोग सिर्फ खेतों में हल चलाना ही नहीं जानते बल्कि पंजाब वालों ने घरों में से निकाल निकाल कर लंदन में से भी दुश्मन मार मुकाए हैं और कहा है कि बेशक कौम के लिए सर भी कट जाए तो कोई बात नहीं लेकिन पंजाब के लोग कभी किसी के आगे सर नहीं झुकाते। दूसरी तरफ गाने में बच्चे, बूढ़े और जवानों का हौसला बढ़ाते हुए पंजाब को जिताने के लिए उनके अंदर वीर रस का संचार किया है। (गरेवाल)

2. किसानी एंथम[11]

इस गीत को जस बाजवा, अफसाना खान, जॉर्डन संधू, फाजिलपुरिया, दिलप्रीत ढिल्लों, श्री बरार, बॉबी संधू, निशवान भुल्लर आदि बहुत से कलाकारों द्वारा गाया गया है। इस गाने को श्री बराड़ ने लिखा है और इस गाने का संगीत फ्लैमो म्यूजिक (अर्श) द्वारा किया गया है। इस गाने का गायन वीर रस में किया गया है जिसे सुनने वालों में एक जोश भर जाता है। इस गीत में सरकार के द्वारा आंदोलनकारीयों पर किए गए अत्याचारों, आंदोलन की परिस्थितियों, अपने अस्तित्व को बचाए रखने, सकारात्मक सोच से संबंधित आदि हर पहलू का वर्णन किया गया है। इस गीत में पंजाबियों के खुशमिजाज स्वभाव, लंगर, सरकार के द्वारा आंदोलनकारीयों पर किए गए अत्याचारों और किसानों की ओर से इंकलाब के नाअरे और अपने अस्तित्व के बारे में बताते हुए अपने ईष्ट को अरदास विनती करते हुए दिखाया गया है। इन गीतों में मीडिया के बिकने, ट्रैक्टरों से बैरीकेट हटाने, सरकार के खिलाफ लोगों को जागृत करने आदि जैसी आंदोलन की हर प्रकार की गतिविधियों को इस गाने में बहुत ही खूबसूरती से बयां किया गया है और इस गीत के जरिए लोगों में साहस और वीर रस भरने की कोशिश की गई है। (बाजवा)

3. पेचा [12]

यह गाना कनवर गरेवाल और हर्फ चीमा ने मिलकर गाया है इस गाने को हर्फ चीमा ने लिखा है और इस गाने का संगीत कनवर गरेवाल ने दिया है। इस गीत में जुल्म के विरुद्ध आवाज उठाते हुए लोगों को जगाने की कोशिश की गई है और अपने अस्तित्व को बचाए रखने के लिए लोगों को सरकार के विरुद्ध खड़े होने के का संदेश दिया गया है।(गरेवाल)

गीतों का मनोवैज्ञानिक प्रभाव

किसान आंदोलन में मुझे खुद वहाँ जाने का मौका मिला और जहाँ की परिस्थितियों और हालात देखते हुए लोगों से मिलने और वार्तालाप करने का मौका मिला। जिनमें से कुछ लोगों के विचारों को यहाँ रखना उचित होगा जिनमें उनके ऊपर पड़े सांगीतिक प्रभाव को देखा जा सकता है।

- ''हम पूरा दिन धरने पर बैठकर नाहरेबाजी करते हैं, अखबार पढ़ते हैं और काम करते हैं पर कहीं न कहीं हमारे अंदर न उम्मीद सी हो जाती है लेकिन जब कोई गाने बजाने वाला आता है और वीर रस वाले क्रांतिकारी गीत गाता है तो हम में नवचेतना का विकास हो जाता है। हम फिर खड़े हो जाते हैं।''[13](नेहा)

- ''रणजीत बावा का फतह गीत आन्दोलन में बहुत चला।जिसके बारे में एक आंदोलनकारी ने साक्षात्कार में बताया कि काफी देर से हम यहाँ धरने में हैं और सरकार के खिलाफ जोर-शोर से आंदोलन कर रहे हैं। लेकिन जब कोई सुनवाई नहीं होती तो कहीं ना कहीं मन डोल जाता है। जब ऐसे कलाकारों के हम गीत सुनते हैं तो हमें हौसला मिलता है और फिर लगता है कि नहीं जीत हमारी ही होगी।''[14] (गुरकीरत)
- ''एक और साक्षात्कार में बताया कि कोरोना जैसी एक महामारी का भयंकर समय चल रहा है लेकिन हम अपने बूढ़े मां-बाप और बच्चों को छोड़कर यहाँ धरने पर बैठे हैं तो संगीत जो है हमारे मानसिक विकास के लिए हमेशा तत्पर रहने में संगीत और ऐसे वीर रसी गीत हमें सहायता प्रदान करते हैं।''[15] (शर्मा)
- ''असी पंजाब दे रहने वाले अपनी होंद दा एहसास करौंदे हुए सरकार के विरुद्ध धरना लगा रहे हैं और साडे पंजाबी वीर और गायक साड़े मनोबल नू गिरन नहीं दिन्दे जोकि सानू बड़ा हौसला दिन्दे ने और असी इस आंदोलन विच दिन रात डट के सरकार विरुद्ध धरना दे रहे हां।''[16] (रणजीत)
- ''देखिए सभी ने अपना अपना योगदान इस किसान आंदोलन में दिया और जहाँ तक संगीत की बात है आप देखिए कि गांव में किसी गाड़ी में जोर जोर से गीत लगा कर हम घूम नहीं सकते उसका जुमार्ना है और इस आंदोलन में लोग अपने ट्रैक्टरों, गाड़ियों में ऊंची आवाज में किसान आंदोलन के गीत लगा कर दिल्ली तक गए और बड़ी बात कि किसी का चलान भी नहीं हुआ और लोगों में खास कर ऐसे समय में नौजवानों में एक खास प्रकार का जोश देखने को मिला और वहीं दूसरी ओर बुर्जग लोग जो कभी किसी काम के सिलसिले में दिल्ली बहुत दूर होने की वजह से वहाँ जाने से ही मना कर देते हैं वो भी इस आंदोलन में ट्रैक्टर, ट्रालियों में बैठकर दिल्ली इस आंदोलन में बड़ी गिनती में पहुँचे।'' [17] (अमनजीत)
- ''सरकार तक हमारी बात पहुँचाने के लिए हमने यह आंदोलन शुरू किया था और सरकार अगर हमारी बात सुनती तो हम संघर्ष ही क्यों करते ? इस किसान आंदोलन में बहुत सी पार्टियों, नेताओं, धर्म प्रचार कमेटीयों ने और बहुत से गायको ने अपना योगदान दिया और अगर उनके गानों की बात करें तो घर में हम भी कभी शादी के शुभ अवसर या खुशी के मौके पर गीत संगीत करते हैं तो जो व्यक्ति कभी संगीत में रुचि नहीं भी रखता वह भी अपने मन के भाव उस समय प्रकट करता है तो किसान आंदोलन के समय में तो बहुत से गाने आए और गीतकारों ने यहाँ आंदोलन में आ कर गीत गाए तो ऐसे में उनसे हमारे नौजवानों को बहुत उत्साह मिला है और उनके गानों ने हमारा मनोबल बढ़ा कर रखा है।''[18] (लालपुरा)

सारांश

उपरोक्त आंदोलनों की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि में जाने से पता चलता है कि इन आंदोलनों में जहाँ नेताओं के भाषण और वीरता पूर्वक कविताओं ने अपना योगदान दिया वहीं इन आंदोलनों को सफल करने में संगीत का भी बहुत बड़ा योगदान दिखाई पड़ता है जैसे कुछ एक गीत जो इन आंदोलनों में निकलकर सामने आए जैसे आखरी फैसला, जीतुगा पंजाब, किसानी एंथम, जालम सरकारा, फतेह इबारत, एलान, पगड़ी संभाल जट्टा, कर चले हम फिदा, मेरा रंग दे बसंती चोला आदि। जिनसे पता चलता है कि सामाजिक आंदोलनों या उनकी सफलता में संगीत की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है। आंदोलन में आए इन गीतों ने लोगों की मानसिकता को गिरने नहीं दिया और भीष्म परिस्थितियों में भी सरकार के द्वारा उनके ऊपर किए गए अत्याचारों के अंतर्गत ऐसे गीतों ने उनकी मानसिकता एवं मनोबल को बढ़ाकर रखा जिसके फलस्वरूप यह आंदोलन सफल हुआ।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. बावा रणजीत, पंजाब बोल्दा, रणजीत बावा, 2020
2. मूसेवाला सिद्धू, पंजाब, द किड, 2020
3. बाजवा जस, देख दिल्लीए, जस बाजवा, 2021
4. गरेवाल कनवर, ऐलान, रूबाई म्यूजिक, 2021
5. गरेवाल कनवर, आखरी फैसला, रूबाई म्यूजिक, 2021
6. संधू विरासत, फतेह मोर्चा , विरासत संधू म्युजिक, 2021
7. सरताज सतिंदर, फतेह इबारत , बीट मिनिस्टर, 2021
8. गरेवाल गिप्पी, जालम सरकारां , हम्बल म्यूजिक, 2020
9. अटवाल इंदर, डंडा अे खंडा , कोआइन डिजिटल, 2020
10. गरेवाल कनवर et at, जितूगा पंजाब , रूबाई म्यूजिक, 2021
11. बाजवा जस et at, किसानी एंथम , फ्लेम म्युजिक, 2020
12. गरेवाल कनवर et at, पेच्चा , रूबाई म्यूजिक, 2021
13. साक्षात्कार, नेहा, 3 फरवरी 2021
14. साक्षात्कार, सिंह गुरकीरत, 10 फरवरी 2021
15. साक्षात्कार, शर्मा निष्ठा, 12 फरवरी 2021
16. साक्षात्कार, सिंह रणजीत (किसान आगू तरनतारन जोन, पंजाब), 5 मार्च 2021
17. साक्षात्कार, सिंह अमनजीत, 12 मार्च 2021
18. साक्षात्कार, लालपुरा, पाखर सिंह (किसान आगू), 27 मार्च 2021